कारक प्रकरण Part I

Topic - 43. प्रथमा विभक्तिः

प्रातिपदिकार्थलिङ्ग परिमाणवचनमात्रे प्रथमा ।

नियतोपस्थितिकः प्रातिपदिकार्थः । मात्रशब्दस्य प्रत्येकं योगः । प्रातिपदिकार्थमात्रे, लिङ्गमात्राधिक्ये, परिमाणमात्रे संख्यामात्रे च प्रथमा स्यात् । उच्चैः । नीचैः । कृष्णः । श्रीः । ज्ञानम् । अलिङ्ग नियतलिङ्गश्च प्रातिपदिकार्थमात्र उदाहरणम् । अनियतलिङ्गास्तु लिङ्गमात्राधिक्यस्य । तटः । तटी । तटम् ।

परिमाणमात्रे - द्रोणो व्रीहिः । द्रोणरूपं यत्परिमाणं तत्परिच्छिन्नो व्रीहिरित्यर्थः । प्रत्ययार्थे परिमाणे प्रकृत्यर्थोऽभेदेन संसर्गेण विशेषणम् । प्रत्ययार्थस्तु परिच्छेद्य परिच्छेदकभावेन व्रीहौ विशेषणम् इति विवेकः । वचनं संख्या । एकः । द्वौ । बहवः । इहोक्तार्थत्वाद् विभक्तेरप्राप्तौ वचनम् ।

अतः प्रातिपदिकार्थ मात्र में, लिङ्ग मात्र की आधिकता में तथा परिमाण मात्र की आधिकता में और वचन मात्र में प्रथमा विभक्ति हो ।

यस्मिन् प्रातिपदिके उच्चारिते स्वार्थ - द्रव्य लिंग संख्या कारकेषु पञ्चसु मध्ये ~~[illegible]~~ यस्यार्थस्य नियमेनोपस्थितिः स प्रातिपदिकार्थः ।

"अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्" ।

"कृत्तद्धितसमासाश्च" (प्रातिपदिकम्)

सम्बोधन में

जिस प्रातिपदिक के उच्चारित होते
स्वार्थ द्रव्य, लिंग, संख्या और कारक - इन
पाँचों में जिस किसी भी अर्थ का नियम से
बोध हो वह प्रातिपदिकार्थ कहलाता है। अलिंग
और जिनका लिंग नियत है वे शब्द प्रातिपदिकार्थ
मात्र के - इसके उदाहरण हैं। यथा - उच्चैः।
नीचैः। प्रातः। सायम्। कुसुमम्। अहो इत्यादि
अव्यय अलिंग हैं। इनमें प्रथमा का एकवचन
'सु' लगता है, किन्तु उसका 'अव्ययादाप्सुपः'
सूत्र से लोप हो जाता है। उच्चैस और नीचैस
शब्दों के मौलिक (स) के स्थान पर में विसर्ग हो जाता है।
तथा और उसके स्थान में विसर्ग हो जाता है।
प्रातर् के मौलिक र का विसर्ग। इस व्याकरण
(अपदं न प्रयुञ्जीत) किसी भी प्रातिपदिक
के सिद्धान्त के अनुसार पदानि स्युरिति के पूर्व प्रयोग
या धातु का उसकी सुप्तिङन्तं पदम्।
नहीं करना चाहिए। अर्थात् सुप्तिङन्त प्रयोग करना
से पद संज्ञा करके ही उसका प्रयोग पुलिंग है। अतः
चाहिए। कृष्णः यह नित्य पुलिंग है। ज्ञानम् यह नित्य
यह नित्य स्त्रीलिंग है। रामः भीष्मः, सूर्यः
नपुंसकलिंग है। इसी प्रकार रामः भीष्मः, सूर्यः
चन्द्रः, रात्रिः, प्रभा, पृथ्वी, व्योमम्, गमनम्
आदि शब्द नियत लिंग हैं। ये भी प्रातिपदिकार्थ
मात्र के उदाहरण हैं। अनियतलिङ्गाः शब्दाः
लिंगमात्राधिक्यस्य उदाहरणम्। जिनके लिंग
नियत नहीं हैं वे शब्द लिंगमात्राधिक्य
के उदाहरण हैं। यथा - तटः तटी। तटम्
तट शब्द तीनों लिंगों में प्रयुक्त होता है।
यद्यपि तट शब्द उच्चारित होते ही तटत्व
रूप (किनारा) अर्थ उपस्थित होता है
किन्तु उसकी त्रिलिंगता उपस्थित नहीं होती,
में प्रथमा होता है।

द्रोणो व्रीहिः का अर्थ होता है — द्रोणरूपं यत् परिमाणं तत्परिच्छिन्नो व्रीहिः। अर्थात् द्रोण रूप जो परिमाण उससे तुला हुआ — स्यात्। अयमाशयः — प्रत्ययार्थे परिमाणे प्रकृत्यर्थोऽभेदेन संसर्गेण विशेषणम्। परिच्छेदकभावेन व्रीहौ प्रत्ययार्थस्तु परिच्छेद्यं विशेषणम् इति विवेकः। तात्पर्य यह है कि प्रकृति से प्रत्यय के अर्थ सामान्य परिमाण में प्रकृति का अर्थ विशिष्ट परिमाण अभेदसंबन्ध से विशेषण है, क्योंकि 'सामान्यविशेषयोरभेदान्वयः' यह नियम है।

प्रस्थो गोधूमः (सेरभर गेहूँ)। कुडवो यवः (पावभर यव)। परिमाण का अर्थ तोल और माप है। अतएव, हस्तः पटः (हाथ भर वस्त्र), वितस्तिः तूलिका (बित्ताभर पलिल) इत्यादि माप के उदाहरण जानने चाहिए।

वचन मानें एकः द्वौ बहवः।

आशय यह है कि एक, दो बहुत — ये प्रातिपदिकार्थ हैं और ये ही विभक्तियों के अर्थ हैं। ऐसी स्थिति में प्रातिपदिकार्थ मात्र में विभक्ति करने से अन्वित अर्थ नहीं हो सकेगा। क्योंकि ('उक्तार्थानामप्रयोगः' इस नियम के अनुसार एक ही अर्थवालों का एक साथ प्रयोग नहीं हो सकता और विभक्ति न करने से पदत्व का सम्पादन भी नहीं होगा। अतः पदत्व संपादनार्थ वचन ग्रहण किया गया है। यही मूल में कहा है।

इहोक्तार्थत्वाद विभक्तेरप्राप्तौ वचनम्

② सम्बोधने च कहे प्रथमा स्यात्।

हे राम ॥

सम्बोधन में भी प्रथमा विभक्ति
हो। हे राम। हे विष्णो। हे हरे।
भोः सुते। भोः कन्ये। हे विधातः
कृपां कुरु। सुते ममापराधं क्षमस्व।
अग्ने। नय सुपथा राये अस्मान्।